❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा विभेर्न मरिष्यसि।।

अथर्व. 5/30/8

हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।

O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 40, अंक 46 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 11 सितम्बर, 2017 से रविवार 17 सितम्बर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमार : 6, 7, 8 अक्टूबर 2017 की तैयारियां लगभग पूर्ण

आर्य महासम्मेलन को लेकर आर्यजनों में भारी उत्साह

देश विदेश से भारी संख्या में आर्यजनों के पधारने की सूचनाएं प्राप्त : भारत, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, कनाडा, मॉरीशस, न्यूजीलैण्ड, हॉलैण्ड सहित ब्रह्मदेशों के सभी अंचलों से भारी संख्या में पहुंचेंगे आर्य प्रतिनिधि।

सेन्ट्रल आर्य समाज माण्डले में आर्यजनों को दिया गया सामूहिक एकरूप यज्ञ प्रशिक्षण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार के संयुक्त तत्त्वावधान में ऐतिहासिक शहर मांडले में 6-7-8 अक्तूबर को आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारियों, व्यवस्था एवं आवश्यकताओं की चर्चा एवं निरीक्षण के लिए सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी एवं उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी मांडल पहुंचे। इस अवसर पर विभिन्न व्यवस्थओं का निरीक्षण के उपरान्त श्री प्रकाश आर्य जी आर्यसामाज मांडले भजन प्रवचन हुए। सम्मेलन में यज्ञ की एकरूपता एवं सुन्दरता बनाने के लिए सामूहिक प्रशिक्षण का भी आयोजन किया गया।

महासम्मेलन की तैयारियों के लिए कार्यकर्ताओं की बैठक को सम्बोधित करते म्यामार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री अशोक खेत्रपाल जी, मंचस्थ सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी एवं उपमन्त्री श्री विनय आर्य। इस अवसर पर यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त करते आर्यसमाज मांडले के कार्यकर्ता अधिकारी एवं सदस्यगण।

आखिर इन बच्चों का गुनाह क्या था?

...आज प्रद्युम्न का हत्यारा बस कंडक्टर सलाखों के पीछे है। यमुनापार स्कूल में बच्ची से दुष्कर्म करने वाला गार्ड भी पकड़ा गया। समाज का एक हिस्सा समझ रहा होगा चलो अब कुछ नहीं होगा तो यह सिर्फ भूल है क्योंकि कल कोई दूसरा किसी मासूम का जीवन वासना की तृप्ति के लिए लील रहा होगा। दुनिया में यौन शोषण के शिकार हुए बच्चों की सबसे बड़ी संख्या भारत में है लेकिन फिर भी यहां इस बारे में बात करने में हिचक दिखती है। ....

₹ यान इंटरनेशनल स्कूल में 7 साल के बच्चे के साथ यौन शोषण के बाद हत्या करने वाले स्कूल बस कंडक्टर अशोक ने अपना गुनाह कबूल करते हुए कहा कि मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी थी इस कारण मैंने इस कृत्य को अंजाम दिया। इसके अगले दिन दिल्ली के गांधीनगर इलाके के रघुवरपुरा में एक निजी स्कूल में सिक्योरिटी गार्ड द्वारा एक 8 साल की बच्ची को रेप का शिकार बनाना इन घटनाओं के तमाम बिन्दुओं पर सवाल उठता है कि हमारा समाज कहाँ जा रहा है?

बस कंडक्टर अशोक यौन शोषण में नाकामयाब हुआ उसने प्रद्युम्न का गला रेत दिया, दूसरे स्कूल में गार्ड कामयाब हुआ उसने एक बच्ची का जीवन तबाह कर दिया। पिछले वर्ष के आखिर में महाराष्ट्र के नेरुल इलाके में स्थित MGM स्कूल में एक बच्ची के साथ उसका अध्यापक ही जबरदस्ती करता रहा। आखिर हमारे समाज में बाल यौन शोषण के मामले इस रफ्तार से क्यों बढ़ रहे है? जैसे-जैसे हमारा समाज अधिक शिक्षित और प्रगतिशील होता जा रहा है वैसे-वैसे ही समाज में बाल यौन शोषण, उसके बाद हत्या के आंकड़े सरपट भागते दिखाई दे रहे हैं। आखिर क्यों हर रोज लोगों की बुद्धि भ्रष्ट हो रही है इसका कारण जानना नितांत जरूरी है।

पिछले वर्ष ही एक शर्मनाक खबर आई थी कि एक भाई ने अपनी बहन का रेप इसलिए कर दिया, क्योंकि उसने इंटरनेट पर कुछ देखा लेकिन उसे समझ नहीं आया। उस चीज को आजमाने के लिए उसने ऐसा किया। दरअसल हमारे देश का चाहे प्रिंट मीडिया हो या इलैक्ट्रोनिक, सभी जगह उत्तेजक व उग्र सामग्री की कोई कमी नहीं है। विज्ञापन चाहे किसी भी वस्तु का हो, लेकिन उस में नारी की कामुक अदाएं व उसके अधिक से अधिक शरीर को दिखाने पर जोर रहता है। फुटपाथ पर अश्लील साहित्य व ब्लू फिल्मों की सीडी, डीवीडी आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। बाकी कसर मोबाइल व फ्री इंटरनैट ने पूरी कर दी है। जहां प्रतिदिन हजारों लोग अश्लील सामग्री का अवलोकन करते हैं। नकारात्मक विचार

– शेष पृष्ठ 7 पर

मोदी जी से मिले आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार के अधिकारी

भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र दामोदर मोदी जी के जी म्यांमार (बर्मा) पहुंचने पर आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार (बर्मा) के प्रधान श्री अशोक खेत्रपाल जी (श्री मोदी जी के एकदम बाएं) ने आर्यसमाज की ओर से भेंट करते हुए।

वेद-स्वाध्याय

ज्ञानी भक्त और विषयासक्त

यो अस्मै घ्रंस उत वा य ऊधनि सोम सुनोति भवति द्युमॉ अह।
अपाप शक्रस्ततनुष्टिमूहति तनूशुभ्रं मघवा यः कवासखः।। ऋ. 5/34/3
ऋषिः **संवरणः प्राजापत्यः।।** देवता - **इन्द्रः।।** छन्दः **जगती।।**

शब्दार्थ - **यः**=जो **घ्रंस उत वा यः ऊधनि**= दिन होवे या रात सदैव ही जो **अस्मै**=इस परमेश्वर के लिए **सोमं सुनोति**=ज्ञानपूर्वक भक्ति में रहता है, यजन करता है **अह द्युमान् भवति**= वह निश्चय से तेजस्वी (प्रकाशवान्) हो जाता है ओर इसके विपरीत **ततनुष्टिम्**= विषयों में दिनों-दिन फँसते जाने वाले को, स्वार्थरत, अजयनशील को, **तनूशुभ्रम्**=शरीर की सजावट-बनावट में लगे रहने वाले को **यः कवासखः**= और जो बुरी संगत में रहने वाला है, जिसके कि यार-दोस्त कुत्सित-कर्मा लोग हैं, उस पुरुष को भी **शक्रः मघवा**= सर्वशक्तिमान् ऐश्वर्यवाला इन्द्रदेव **अप अप ऊहति**= मिटा देता है, विनाश कर देता है।

विनय - मैं इन दो प्रकार के आदमियों में से कौन-सा हूँ? क्या मुझे दिन-रात भगवान् के भजन में मस्त रहने में आनन्द आता है? क्या मैं चौबीस घण्टे उसके भजन में लीन रहता हूँ। चौबीस घण्टे न सही, क्या मैं दिन-रात में से एक घण्टा भी भगवान् के प्रति अपना हार्दिक प्रेमरस पहुंचाने में बिताता हूं? अथवा मैं 'ततनुष्टि' हूँ? दिन-रात विषयों में फँसा रहता हूँ? न खत्म होने वाले विषयों की तृप्ति में लगा रहता हूँ? स्वार्थ के लिए धन कमाने की चिन्ता में और धन के लिए दूसरों के क्लेशों की कुछ परवाह न करके और धोखा-फ़रेब भी करके उनके चूसने की नाना नयी-नयी तरकीबें सोचने और करने की फिक्र में तो कहीं मेरे दिन-रात नहीं बीतते हैं? क्या अपने शरीर की शोभा बढ़ाने, संवारने, शृंगार करने में ही जीवन के अमूल्य समय के प्रतिदिन कई घण्टे मैं नहीं खो रहा हूँ? क्या मैंने अपने अन्दर के मानसिक शरीर को भी बलवान्, स्वच्छ और सुन्दर (पवित्र) करने का भी कभी यत्न किया है? इसके लिए समय दिया है? मेरे साथी-संगी कैसे लोग हैं? कहीं मेरे इर्द-गिर्द बुरे आचरणवाले लोग तो इकट्ठे नहीं हो गये हैं? कहीं मैं कुत्सित कर्म करने वाले दुष्ट मनुष्यों से (जो ऊपर से आकर्षक होते हैं) मिलने-जुलने में आनन्द तो नहीं पाता हूं? अहो, उस सर्वशक्तिमान्- इन्द्र के नियम अटल हैं, मैं जैसा करूंगा वैसा ही मुझे भरना पड़ेगा। मैं तेजस्वी बनूंगा या मेरा विनाश होगा? भगवान् तो दिन-रात सोम-सवन करने वालों को तेजस्वी बना रहा है और विषय-ग्रस्त पुरुषों का नाश कर रहा है।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

न मौत रुकेगी न राजनीति

....मेरा दुःख उस समय अनाथ सा हो गया जब मैंने प्रेस क्लब में वह पत्रकार और नेता देखे जो सिर्फ अखलाक, पहलु खान और याकूब मेनन की मौत पर मातम मनाते दिखे थे। गौरी लिख रही थी! मुसलमानों की ओर से, भारत से भी खदेड़े जा रहे बर्मा के रोहिंग्या मुसलमानों की ओर से, नक्सलवादियों की ओर से और कश्मीर की आजादी के दीवानों की तरफ से। ..... गौरी की मौत पर दिल्ली के बड़े शिक्षण संस्थान जेएनयू में शोक सभा आयोजित की गयी। उसी जेएनयू में जहाँ सेना के जवानों की शाहदत का जश्न मनाने की पिछले दिनों खबर सबने सुनी थी। गौरी कन्हैया को अपना बेटा मानती थी। उमर खालिद का हाल पूछती थी। वह कर्नाटक की राजनीति में अपनी पत्रिका से एक अलख जगाना चाह रही थी। मुझे नहीं पता उसकी मौत किसके काम आएगी.....

तमिलनाडु के अरियलूर जिले में 17 साल की लड़की एस. अनीता की आत्महत्या ने राजनीतिक शक्ल लेना शुरू ही किया था कि कन्नड़ भाषा की (लंकेश पत्रिका) की सम्पादिका और लेखक गौरी लंकेश की हत्या ने उसे भुला दिया। नेताओं को अनीता की जाति टटोलनी पड़ती। इस कारण बिना मेहनत के ही जानी पहचानी गौरी लंकेश को ही मुद्दा बनाना उचित समझा, मुझे पहली बार जानकर आश्चर्य हुआ कि पत्रकार भी पार्टी, धर्म, मजहब और जातियों में बंधे होते हैं। जहाँ पूरे देश के बुद्धिजीवियों को गौरी की हत्या ने हिलाया वहीं मुझे इस खबर ने हिला दिया कि बीजेपी विरोधी लेखक गौरी लंकेश की हत्या!

ऐसा नहीं है कि मेरे अन्दर गौरी के लिए कोई सहानुभूति या संवेदना नहीं है, मानवता के नाते मुझे भी दुःख हुआ लेकिन मेरा दुःख उस समय अनाथ सा हो गया जब मैंने प्रेस क्लब में वह पत्रकार और नेता देखे जो सिर्फ अखलाक, पहलु खान और याकूब मेनन की मौत पर मातम मनाते दिखे थे। गौरी लिख रही थी! मुसलमानों की ओर से, भारत से भी खदेड़े जा रहे बर्मा के रोहिंग्या मुसलमानों की ओर से, नक्सलवादियों की ओर से और कश्मीर की आजादी के दीवानों की तरफ से।

गौरी की मौत पर दिल्ली के बड़े शिक्षण संस्थान जेएनयू में शोक सभा आयोजित की गयी उसी जेएनयू में जहाँ सेना के जवानों की शाहदत का जश्न मनाने की पिछले दिनों खबर सबने सुनी थी। गौरी कन्हैया को अपना बेटा मानती थी। उमर खालिद का हाल पूछती थी। वह कर्नाटक की राजनीति में अपनी पत्रिका से एक अलख जगाना चाह रही थी। मुझे नहीं पता उसकी मौत किसके काम आएगी शायद उनके ही काम आये जिनके काम दाभोलकर, गोविन्द पानसरे, एमएम कलबुर्गी, अकलाख, इशरत जहाँ की आई थी।

ऐसा नहीं है देश में ये सिर्फ तीन या चार पत्रकार या लेखक मारे गये। नहीं, अकेले बिहार ही में हिन्दी दैनिक के पत्रकार ब्रजकिशोर ब्रजेश की बदमाशों ने गोली मार कर हत्या कर दी। इससे पूर्व भी सीवान में दैनिक हिन्दुस्तान के पत्रकार राजदेव रंजन और सासाराम में धर्मेंद्र सिंह की हत्या की जा चुकी है। पिछली सरकार में उत्तर प्रदेश में एक पत्रकार को कथित रूप से जलाकर मार डालने के आरोप में पिछड़ा वर्ग कल्याण मंत्री के खिलाफ मामला दर्ज हुआ था। कहा जाता है कि कथित रूप से फेसबुक पर मंत्री के खिलाफ लिखने के कारण पत्रकार जगेंद्र सिंह को जान गवानी पड़ी थी। लेकिन इन सबका दुर्भाग्य रहा कि इनके लिए प्रेस क्लब में कोई शोक सभा आयोजित नहीं की गयी और न ही राजकीय सम्मान के साथ इनका गौरी की तरह अन्तिम संस्कार। ''वर्ष 1992 के बाद से भारत में 27 ऐसे मामले दर्ज हुए हैं जब पत्रकारों का उनके काम के सिलसिले में कत्ल किया गया। लेकिन किसी एक भी मामले में आरोपियों को सजा नहीं हो सकी है।''

आज गौरी के अज्ञात हत्यारों का धार्मिक राजनेताओं को पहले ही पता चल गया। कहा जा रहा है कि गौरी हिन्दुओं के विरोध में लिखती थी तो उसकी हत्या हिन्दुओं ने ही की है। दुःख का विषय है नबी के कार्टून बनाने के आरोप में फ्रांस में मारे गये शार्ली हाब्दो के दर्जनों पत्रकारों को मारने वालों का मजहब अभी तक पता नहीं चला, हम जिसे स्वास्थ्य पत्रकारिता समझ रहे हैं, वह दरअसल एक मजहबी सूजन का शिकार जिस्म है।

मैंने सुना था दुःख सुख सबका साझा होता है लेकिन भारत में ऐसा नहीं है जब पत्रकार राजनितिक दलों से, लेखक मजहबों से, कानून संवेदना से और नेता वोटों के लालच में बंधे हों तो वहां आम इन्सान को सुख-दुःख भी बंटा सा नजर आता है। मसलन अरुण आनंद कहते हैं कि नक्सलवादियों के काम करने की विशिष्ट शैली का यह हिस्सा है कि तेजी से दुष्प्रचार करो और छोटे-छोटे आयोजन ज्यादा से ज्यादा जगह पर करो। खासकर मीडिया में एक वर्ग उनका घोर समर्थक है। इस बार भी गौरी लंकेश की हत्या के बाद कमोबेश सभी जगह वामपंथियों और नक्सलवाद के समर्थकों ने विरोध प्रदर्शनों की अगुआई की। दिल्ली के प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में जेएनयू में भारत विरोधी नारे लगाने वाले कन्हैया कुमार पहुंच गए। बताइए! पत्रकार संगठनों के कार्यक्रम में 'भारत तेरे टुकड़े होंगे' का नारा देने वाले कन्हैया कुमार का क्या काम! फिर डी. राजा, सीताराम येचुरी भी पहुंचे। इन सभी ने माइक पकड़कर भाषण भी दिए। कुछ अवसरवादी तत्त्वों के कारण पत्रकार संगठनों द्वारा एक पत्रकार की हत्या के विरोध में आयोजित शोक सभा राजनीति का अखाड़ा बन गई और अब इस आंदोलन को फिर असहिष्णुता के पुराने पड़ चुके मुद्दे से फिर से जोड़ने की कोशिश जारी है।

इस पूरे प्रकरण में जो सबसे शर्मनाक सच सामने आया है वह यही है कि शहरी नक्सलवादी गौरी लंकेश की हत्या की आड़ में राष्ट्रवादियों पर निराधार आरोप लगाकर निशाना साध रहे हैं। उन्हें गौरी लंकेश की हत्या से कोई दुख नहीं हुआ। उनके लिए यह हत्या एक सुअवसर बन गया है, अपने वैचारिक विरोधियों से हिसाब-किताब बराबर करने का। मीडिया व राजनीतिज्ञों का एक वर्ग भी अपनी चिढ़ के कारण इस कुप्रचार में शामिल हो गया है। यह दुखद है लेकिन लगता है कि सत्ता से बाहर रहने का दंश इतना तीखा है कि लाशों की राजनीति अब होती ही रहेगी।

-सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

रोहिंग्या मुसलमान : मानवता का पाठ बन्द करे भारत

.....शरणार्थी भी अहिंसक हों, नियम मानने वाले हों, जिस देश में रहे उसकी देशभक्ति करने वाले हों तो फिर भी ठीक है। वरना कोई भी देश अपने देश में देशद्रोहियों का जमावड़ा नहीं लगाना चाहेगा? तीसरा प्रवास की भी समय सीमा होती है यदि कोई जीवन पर्यंत रहना चाहता है उसको उसके मूल निवासियों की सभ्यता और संस्कृति से कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए.....

मंगलवार की दोपहर कुछ लोग दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन कर रहे थे। मामला था बर्मा में रोहिंगा मुस्लिमों पर हमले के विरोध में यह एक शांति पूर्ण प्रदर्शन। अबकी बार न तो रोहिंग्या मुस्लिमों के पक्ष में मुम्बई के आजाद मैदान में अमर जवान ज्योति पर तोड़-फोड़ की और न ही लखनऊ में महात्मा बुद्ध की मूर्ति खंडित की, शायद सबको ज्ञात होगा पिछली बार 2012 में एक लाख मुस्लिमों ने आजाद मैदान में हिंसा उपद्रव किया था। जिसमें करीब 7 लोग मारे गये थे और बड़ी संख्या में सुरक्षाकर्मी घायल हुए थे। उस दौरान पूर्वोत्तर राज्यों के लोगों को बड़ी संख्या में अपने देश में सुरक्षा की कमी महसूस हुई थी जिस कारण दिल्ली, मुम्बई बेंगलोर आदि बड़े शहरों में रह रहे पूर्वोत्तर राज्यों के लोगों को पलायन करना पड़ा था।

आखिर कौन हैं रोहिंग्या मुसलमान? कहाँ से आये हैं, किधर बसाए गए हैं, भारत को उनसे क्या समस्या है, क्या हमें उनकी मदद करनी चाहिए या फिर ये किसी साजिश के तहत भारत में बसाए जा रहे हैं? सम्भवत: ऐसे तमाम सवाल रोहिंग्या शरणार्थियों के नाम सुनते ही हमारे जेहन में आ जाते हैं। अब जैसे ही 40 हजार रोहिंग्या मुसलमानों को उनके देश म्यांमार वापस भेजने की बात सरकार की ओर उठाई गयी तो प्रदर्शनकारियों, मानवतावादी सेकुलर लोगों का समूह आँखों में आंसू भरकर सरकार को मानवता का पाठ पढ़ाने आ गया। दरअसल यह लोग पिछले पांच से सात साल में भारत में अवैध रूप से घुसे और देश के विभिन्न इलाकों में रह रहे हैं।

अब भारत सरकार रोहिंग्या मुस्लिमों को इनकी पहचान करने और इन्हें वापस म्यांमार भेजने की योजना पर काम कर रही है। म्यांमार की बहुसंख्यक आबादी बौद्ध है। म्यांमार में एक अनुमान के मुताबिक 10 लाख रोहिंग्या मुसलमान हैं। इन मुसलमानों के बारे में कहा जाता है कि वे मुख्य रूप से अवैध बांग्लादेशी प्रवासी हैं। बर्मा सरकार ने इन्हें नागरिकता देने से इन्कार कर दिया है।

मामला सिर्फ नागरिकता तक सीमित रहता तो कोई बात नहीं थी हाल ही में म्यांमार के रखाइन प्रांत में रोहिंग्या चरमपंथियों ने पुलिस चौकी पर हमला किया था जिसमें सुरक्षाबलों के कुछ सदस्य मारे गए थे। इस हमले के बाद भारतीय विदेश मंत्रालय ने कड़ी निंदा करते हुए बयान जारी किया था कि भारत आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में म्यांमार के साथ मजबूती से खड़ा है। हमले के बाद रोहिंग्या समुदाय के खिलाफ सैन्य कार्यवाही शुरू हुई थी और रोहिंग्या शरणार्थी संकट उत्पन्न हो गया।

पूरी दुनिया में बौद्ध धर्म अपनी अहिंसा के लिए जाना जाता है फिर भी रोहिंग्या मुस्लिम और म्यांमार के बौद्ध आपस में सामंजस्य नहीं बैठा पाए? इसके कई कारण हो सकते हैं पहला ये कि किसी भी देश के नागरिक नहीं चाहेंगे कि उनके देश के संसाधनों पर किसी और देश के लोग किसी भी रूप में आकर राज करें। दूसरा कारण ये है कि शरणार्थी भी अहिंसक हों, नियम मानने वाले हों, जिस देश में रहे उसकी देशभक्ति करने वाले हों तो फिर भी ठीक है। वरना कोई भी देश अपने देश में देशद्रोहियों का जमावड़ा नहीं लगाना चाहेगा? तीसरा प्रवास की भी समय सीमा होती है यदि कोई जीवन पर्यंत रहना चाहता है उसको उसके मूल निवासियों की सभ्यता और संस्कृति से कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। लेकिन रोहिंग्या देश से बढ़कर मजहब को मानते हैं, शायद सबसे बड़ा कारण यही हो सकता है जिससे इतने साल म्यांमार में रहने के वावजूद रोहिंग्या मुस्लिम कभी वहां के मूल निवासियों के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पाए।

मानवता के नाते शरणार्थी को शरण देनी चाहिए लेकिन यहाँ मामला सिर्फ शरणार्थी का नहीं है। मैं बे हिचक कहता हूँ इस्लामिक शरणार्थियों के समूह अकेले नहीं आते उनके साथ आता है उनका मजहब, उनकी अन्य मतों से नफरत, हिंसा और कट्टर मानसिकता, जो किसी भी अन्य समाज से घुलने-मिलने को तैयार नहीं होती।

यूरोपीय देशो ने हाल में सीरियाई मुस्लिम शरणार्थियों को शरण दी थी क्या नतीजा निकला? जर्मनी में जर्मन युवतियों के साथ नववर्ष पर सामूहिक दुष्कर्म, फ्रांस में हमले, ब्रिटेन में आतंकी हमले नतीजा आज पूरा यूरोप आतंक के साये में जी रहा है। शायद आप सभी को याद होगा, भारत में बोध-गया मन्दिर में एक बम विस्फोट हुआ था और तब हमलावर ने हमला करने का कारण बताया था कि बौद्ध धर्म को मानने वाले म्यांमार में रोहिंग्या मुसलमानों की खातिर उसने बौद्ध मंदिर पर हमला किया है। बस यहां से शुरुआत होती है इनके मजहबी पाखंड की, म्यांमार में कुछ हो रहा होगा तो आतंक भारत में फैलाया गया और भारत का राजनैतिक सेकुलिरिज्म ''आतंक का कोई मजहब नहीं होता'' उच्चारित करके सो जाता है।

वर्ष1990 कश्मीर दंगें में एक ओर जहां कश्मीरी पंडित अपने ही देश में शरणार्थी बनने को मजबूर हैं, मुस्लिम वोट बैंक के लिए नेताओं ने साजिश के तहत उनको कभी कश्मीर में वापस बसने नहीं दिया। कश्मीर में से लगभग सारे के सारे हिन्दू या तो मार दिए गए या फिर भगा दिए गए। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 के तहत कोई भी भारतीय जो कश्मीर का निवासी नहीं है, वहां जमीन नहीं ले सकता है लेकिन नेताओं ने रोहिंग्या मुसलमानों को जम्मू-कश्मीर में बसने दिया गया क्यों?

हालाँकि यह अभी तक साफ नहीं है कि भारत इन रोहिंग्या मुसलमानों को म्यांमार में भेजेगा या फिर बांग्लादेश में। रोहिंग्या मुसलमानों को निर्वासित करने का मुद्दा भारत के सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच चुका है जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से जवाब मांगा है रोहिंग्या मुस्लिमों की पैरवी जाने-माने वकील प्रशांत भूषण कर रहे हैं।

अब जब भारत सरकार ने रोहिंग्या मुसलमानों को वापस भेजने का मन बना ही लिया है तो इसमे मानवाधिकार संगठनों को आपत्ति है, यही मानवधिकार संगठन उस समय घास चरने चला जाता है जब कश्मीरी पंडितों को मारकर अपने ही घरों से बेदखल कर दिया जाता है, इराक में यजीदी महिलाओं पर मजहबी अत्याचार होता है या फिर पाकिस्तानी सेना बलूचों पर जुल्म करती है। करांची और सिंध में जबरदस्ती हिन्दू लड़कियों को उठा लिया जाता तब न तो ये मानवता के दलाल दिखाई देते हैं न ही विकसित देशों के राजनेता जिन्हें बस दूसरे देशों में ही शरणार्थी ठिकाने लगाने होते हैं। कुछ लोगों को इससे भी आपत्ति है कि भारत ने 1950 मे तिब्बती शरणार्थियों को अपनाया, 1971-72 में बंगलादेशी हिन्दू शरणार्थियों को अपनाया तो रोहिंग्या मुसलमानों को क्यों वापस भेजा जा रहा है? भारत में कितने लोग गरीबी रेखा ने नीचे रह रहे हैं, कितने लोगों को एक समय का खाना भी नसीब नहीं हो रहा? अशिक्षा से हमारा मुल्क अभी भी लड़ रहा है। क्या ऐसे में ये गैर-जिम्मेदार शरणार्थी हमारे देश की समस्याएं और नहीं बढ़ाएंगे?

- राजीव चौधरी

बोध कथा

विनाशकाले विपरीत बुद्धिः

आयुर्वेद शास्त्र के महान् ग्रन्थ 'चरक' को लिखनेवाले महर्षि पुनर्वसु अपने अद्वितीय ग्रन्थ को लिखने के पश्चात् एक जंगल में चले जा रहे थे। घने जंगल की पगडंडी पर आगे वे थे, पीछे उनका शिष्य अग्निवेश। एकाएक महर्षि पुनर्वसु खड़े हो गये। आगे की ओर देखा उन्होंने, चारों ओर देखा। एक लम्बी सांस लेकर बोले-''महानाश आने वाला है।'' अग्निवेश ने पूछा-''कैसा महानाश, गुरुदेव?''

पुनर्वसु बोले-''मैं देखता हूं कि जल बिगड़ रहा है, पृथिवी बिगड़ रही है, वायु, तारे, आकाश, सूर्य और चन्द्र बिगड़ रहे हैं। अरे, अनाज अपनी शक्ति छोड़ देगा। औषधियां अपना प्रभाव छोड़ देंगी। पृथिवी पर टूटते हुए तारे गिरेंगे। विनाश करने वाली आंधियां चलेंगी। विनाशकारी भूकम्प उठेंगे। बड़े-बड़े बम गिरेंगे। महानाश का महाताण्डव जाग उठेगा। मनुष्य बचेगा नहीं, बचेगा नहीं।''

यह कथा 'चरक' के विमान-स्थान के तीसरे अध्याय में आती है। इसमें लिखा है कि अग्निवेश ने जब यह भयानक भविष्यवाणी सुनी तो हाथ जोड़कर कहा-''गुरुदेव! आप यह भयभीत करने वाली भविष्य-गाथा क्यों कर रहे हैं? सब रोग का सामना कर सकें, ऐसा ग्रन्थ आपने लिख दिया। दुनिया के प्रत्येक रोग का इलाज लिख दिया। फिर भी यह विनाश आयेगा तो क्यों?

महर्षि पुनर्वसु ने कहा-''इसलिये आयेगा कि लोग धर्म को छोड़कर अधर्म की ओर चल पड़ेंगे-सत्य को छोड़कर असत्य की ओर। सत्य और धर्म में रुचि नहीं रहेगी।'' अग्निवेश ने पूछा-''धर्म और सत्य की ओर मनुष्य की रुचि न रहने का क्या कारण होगा, गुरुदेव?''

गुरु बोले-''बुद्धि का बिगड़ जाना ही इस महानाश का कारण होगा। जब बुद्धि बिगड़ जाती है, जब वह सत्य का मार्ग छोड़कर असत्य की ओर बढ़ती है, तब धर्म में रुचि नहीं रहती।''

बुद्धि का बिगड़ जाना ही सब रोगों का कारण है, परन्तु बुद्धि के बिगड़ जाने से केवल शारीरिक रोग पैदा नहीं होते, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और आत्मिक, सभी रोग पैदा होते हैं। इसीलिये कहते हैं कि जब नाश का समय निकट आता है, तब बुद्धि उलटे मार्ग पर चलने लगती है। भगवान् कृष्ण ने भी गीता में कहा है- ***बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।***

बुद्धि का नाश होने से महानाश जाग उठता है।

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को कम्प्यूटर पर डेटा कलैक्ट करने, फोन अटेन्ड करने हेतु अटैंडेंट, हिन्दी टाइपिस्ट एवं सम्पादकीय क्षमता व रुचि रखने वाले महानुभावों आवश्यकता है। योग्य इच्छुक अभ्यार्थी अपना आवेदन पत्र, प्रबन्धक, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेज देवें या aryasabha@yahoo.com पर मेल कर देवें।

हिन्दी दिवस
14 सितम्बर पर विशेष

उजड़ रही है हिन्दी

...भारतीय भाषाओं के माध्यम के विद्यालयों का आज जो हाल है वह किसी से छुपा नहीं है। सरकारी व सामाजिक उपेक्षा के कारण ये स्कूल आज केवल उन बच्चों के लिए हैं जिनके पास या तो कोई और विकल्प नहीं है जैसे कि ग्रामीण क्षेत्र या फिर आर्थिक तंगी। इन स्कूलों में न तो अच्छे अध्यापक हैं न ही कोई सुविधाएँ तो फिर कैसे हम इन विद्यालयों के छात्रों को कुशल बनाने की उम्मीद कर सकते हैं। भारत आज खुद को सूचना प्रौद्योगिकी का राजा कहता है किन्तु कहलाने के बाद भी हम हमारी भाषाओं में काम करने वाले कम्प्यूटर विकसित नहीं कर पाए हैं।...

एक समय था जब हिन्दी और संस्कृत बोलने वालों में भाषायी दूरी हुआ करती थी, संस्कृत बोलने वाले हिन्दी बोलने वालों को खुद की अपेक्षा कम ज्ञानी समझा करते थे। आज कुछ ऐसा ही हाल हिन्दी और अंग्रेजी भाषा के बीच खड़ा हो गया है। कुछ इस तरह कि अगर कोई अंग्रेजी बोल रहा है तो पढ़ा-लिखा विद्वान ही होगा। कुछ लोगों का कहना है कि शुद्ध हिन्दी बोलना बहुत कठिन है, सरल तो केवल अंग्रेजी बोली जाती है। अंग्रेजी जितनी कठिन होती जाती है उतनी ही खूबसूरत होती जाती है, आदमी उतना ही जागृत व पढ़ा-लिखा होता जाता है। आधुनिकीरण के इस दौर में या वैश्वीकरण के नाम पर जितनी अनदेखी और दुर्गति हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं की हुई है उतनी शायद ही किसी देश की भाषा की हुई हो। घर में अतिथि आये तो बच्चों से कहते है बेटा अंकल को हलो बोलो और जब जाये तो बेटा बाय बोलो।

चौदह सितम्बर समय आ गया है एक और हिन्दी दिवस मनाने का, आज हिन्दी के नाम पर कई सारे पाखण्ड होंगे जैसेकि कई सारे सरकारी आयोजन हिन्दी में काम को बढ़ावा देने वाली घोषणाएँ विभिन्न तरह के सम्मेलन होंगे। हिन्दी की दुर्दशा पर अंग्रेजी में घड़ियाली आँसू बहाए जाएँगे, हिन्दी में काम करने की झूठी शपथें ली जाएँगी और पता नहीं क्या-क्या होगा। अगले दिन लोग सब कुछ भूल कर लोग अपने-अपने काम में लग जाएँगे और हिन्दी वहीं की वहीं ठुकराई हुई रह जाएगी।

यह सिलसिला आजादी के बाद से निरंतर चलता चला आ रहा है और भविष्य में भी चलने की पूरी-पूरी संभावना है वास्तव में हिन्दी तो केवल उन लोगों की कार्य भाषा है जिनको या तो अंग्रेजी आती नहीं है या फिर कुछ पढ़े-लिखे लोग जिनको हिन्दी से कुछ ज्यादा ही मोह है और ऐसे लोगों को सिरफिरे पिछड़े या बेवकूफ की संज्ञा से सम्मानित कर दिया जाता है। सच तो यह है कि ज्यादातर भारतीय अंग्रेजी के मोहपाश में बुरी तरह से जकड़े हुए हैं। आज स्वाधीन भारत में अंग्रेजी में निजी पारिवारिक पत्र व्यवहार बढ़ता जा रहा है। काफी कुछ सरकारी व लगभग पूरा गैर सरकारी काम अंग्रेजी में ही होता है, दुकानों आदि के बोर्ड अंग्रेजी में होते हैं, होटलों रेस्टारेंटों इत्यादि के मेनू अंग्रेजी में ही होते हैं। ज्यादातर नियम कानून या अन्य काम की बातें किताबें इत्यादि अंग्रेजी में ही होते हैं, उपकरणों या यंत्रों को प्रयोग करने की विधि अंग्रेजी में लिखी होती है, भले ही उसका प्रयोग किसी अंग्रेजी के ज्ञान से वंचित व्यक्ति को करना हो। अंग्रेजी भारतीय मानसिकता पर पूरी तरह से हावी हो गई है।

माना कि आज के युग में अंग्रेजी का ज्ञान जरूरी है, कई सारे देश अपनी युवा पीढ़ी को अंग्रेजी सिखा रहे हैं पर इसका मतलब यह नहीं है कि उन देशों में वहाँ की भाषाओं को ताक पर रख दिया गया है और ऐसा भी नहीं है कि अंग्रेजी का ज्ञान हमको दुनिया के विकसित देशों की श्रेणी में ले आया है। सिवाय सूचना प्रौद्योगिकी के हम किसी और क्षेत्र में आगे नहीं हैं और सूचना प्रौद्योगिकी की इस अंधी दौड़ की वजह से बाकी के प्रौद्योगिक क्षेत्रों का क्या हाल हो रहा है वह किसी से छुपा नहीं है। दुनिया के लगभग सारे मुख्य विकसित व विकास शील देशों में वहाँ का काम उनकी भाषाओं में ही होता है। यहाँ तक कि कई सारी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अंग्रेजी के अलावा और भाषाओं के ज्ञान को महत्व देती है। केवल हमारे यहाँ ही हमारी भाषाओं में काम करने को हीन भावना से देखा जाता है।

भारतीय भाषाओं के माध्यम के विद्यालयों का आज जो हाल है वह किसी से छुपा नहीं है। सरकारी व सामाजिक उपेक्षा के कारण ये स्कूल आज केवल उन बच्चों के लिए हैं जिनके पास या तो कोई और विकल्प नहीं है जैसे कि ग्रामीण क्षेत्र या फिर आर्थिक तंगी। इन स्कूलों में न तो अच्छे अध्यापक हैं न ही कोई सुविधाएँ तो फिर कैसे हम इन विद्यालयों के छात्रों को कुशल बनाने की उम्मीद कर सकते हैं। भारत आज खुद को सूचना प्रौद्योगिकी का राजा कहता है किन्तु कहलाने के बाद भी हम हमारी भाषाओं में काम करने वाले कम्प्यूटर विकसित नहीं कर पाए हैं। किसी पढ़े-लिखे व्यक्ति को अपनी मातृभाषा की लिपि में लिखना तो आजकल शायद ही देखने को मिले। बच्चों को हिन्दी की गिनती या वर्णमाला का मालूम होना अपने आप में एक चमत्कार ही सिद्ध होगा। क्या विडंबना है? क्या यही हमारी आजादी का प्रतीक है? मानसिक रूप से तो हम अभी भी अंग्रेजियत के गुलाम हैं।

प्रश्न सिर्फ भाषा का नहीं है प्रश्न आत्मसम्मान का, अपनी भाषा का, अपनी संस्कृति का है। वर्तमान अंग्रेजी केंद्रित शिक्षा प्रणाली से न सिर्फ हम समाज के एक सबसे बड़े तबके को ज्ञान से वंचित कर रहे हैं बल्कि हम समाज में लोगों के बीच आर्थिक सामाजिक व वैचारिक दूरी उत्पन्न कर रहे हैं, लोगों को उनकी भाषा, उनकी संस्कृति से विमुख कर रहे हैं। लोगों के मन में उनकी भाषाओं के प्रति हीनता की भावना पैदा कर रहे हैं जोकि सही नहीं है। समय है कि हम जागें व इस स्थिति से उबरें व अपनी भाषाओं को सुदृढ़ बनाएँ व उनको राज की भाषा, शिक्षा की भाषा, काम की भाषा व व्यवहार की भाषा बनाएँ फिर हम हिन्दी दिवस की प्रतीक्षा में नहीं रहेंगे।

प्रेरक प्रसंग

सचमुच वे बेधड़क थे

हरियाणा के श्री स्वामी बेधड़क आर्यसमाज के निष्ठावान् सेवक और अद्भुत प्रचारक थे। वे दलित वर्ग में जन्मे थे। शिक्षा पाने का प्रश्न ही न था। आर्यसमाजी बने तो कुछ शिक्षा भी प्राप्त कर ली। कुछ समय सेना में भी रहे थे। आर्यसमाज सिरसा हरियाणा में सेवक के रूप में कार्य करते थे। ईश्वर ने बड़ा मीठा गला दे रक्खा था। जवानी के दिन थे। खड़तालें बजानी आती थीं। कुछ भजन कण्ठ कर लिये। एक बार सिरसा में श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज का शुभ आगमन हुआ। बेधड़कजी ने कुछ भजन सुनाये। श्री यशवन्त सिंह वर्मा टोहानवी का भजन-

सुनिए दीनों की पुकार दीनानाथ कहानेवाले तथा **है आर्यसमाज केवल सबकी भलाई चाहनेवाला।**

बड़ी मस्ती से गाया करते थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज गुणियों के पारखी थे। आपने श्री बेधड़क के जोश को देखा, लगन को देखा, धर्मभाव को देखा और संगीत में रुचि तथा योग्यता को देखा। आपने बेधड़कजी को विस्तृत क्षेत्र में आकर धर्मप्रचार करने के लिए प्रोत्साहित किया।

बेधड़कजी उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, सिंध, सीमाप्रान्त, बिलोचिस्तान, हिमाचल में प्रचारार्थ दूर-दूर तक गये। हरियाणा प्रान्त में विशेष कार्य किया। वे आठ बार देश के स्वाधीनता संग्राम में जेल गये। आर्यसमाज के हैदराबाद सत्याग्रह तथा अन्य आन्दोलनों में भी जेल गये। संन्यासी बनकर हैदराबाद दक्षिण तक गये। अपने प्रचार से आपने धूम मचा दी।

बड़े स्वाध्यायशील थे। अपने प्रचार की मनादी आप ही कर दिया करते थे।

किस प्रकार के ऋषिभक्त थे, इसका पता इस बात से लगता है कि एक बार पंजाब के मुख्यमन्त्री प्रतापसिंह कैरों ने उन्हें कांग्रेस के टिकट पर एक सुरक्षित क्षेत्र से हरियाणा में चुनाव लड़ने को कहा। तब हरियाणा राज्य न बना था। काँग्रेस की वह सीट खतरे में थी। बेधड़क ही जीत सकते थे।

स्वामी बेधड़कजी ने विधानसभा का टिकट ठुकरा दिया। आपने कहा ''मैं संन्यासी हूँ। चुनाव तथा दलगत राजनीति मेरे लिए वर्जित है। ऋषि दयानन्द ने तो मुझे दलित से ब्राह्मण तथा संन्यासी तक बना दिया। आर्यसमाज ने मुझे ऊँचा मान देकर पूज्य बनाया है और आप मुझे जातपात के पचड़े में फिर डालना चाहते हैं।'' पाठकवृन्द! कैसा त्याग है? कैसी पवित्र भावना है? जब वे अपने जीवन के उत्थान की कहानी सुनाया करते थे कि वे कहाँ-से-कहाँ पहुँचे तो वे ऋषि के उपकारों का स्मरण करके भावविभोर होकर पूज्य दादा बस्तीराम का यह गीत गाया करते थे-

'लहलहाती है खेती दयानन्द की'।

इन पंक्तियों के लेखक ने उन-जैसा दूसरा मिशनरी नहीं देखा। लगनशील, विद्वान् सेवक तो कई देखे हैं, परन्तु वे अपने ढंग के व्यक्ति थे। बड़े वीर स्पष्टवादी वक्ता, तपस्वी, त्यागी और परम पुरुषार्थी थे। शरीर टूट गया, परन्तु उन्होंने प्रचार कार्य बन्द नहीं किया। खान-पान और पहरावे में सादा तथा राग-द्वेष से दूर थे। बस, यूँ कहिए कि ऋषि के पक्के और सच्चे शिष्य थे।

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

विश्व शान्ति महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर के तत्त्वावधान में 16 से 20 अगस्त 2017 के बीच आचार्य आनन्द पुरुषार्थी (होशंगाबाद म.प्र.) के ब्रह्मत्व में 108 यजमान जोड़ों ने 28 वेदियों पर पारिवारिक सुख-शान्ति-समृद्धि, सामाजिक मेल-मिलाप, राष्ट्र कल्याण एवं विश्व शान्ति हेतु यज्ञ आहुतियां प्रदान कीं। आचार्य जी ने यजमानों से दक्षिणा स्वरूप प्रतिदिन माता-पिता एवं बुजुर्गो को प्रणाम, संध्या-वन्दना-यज्ञ, स्वाध्याय करने एवं काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार आदि शुत्रओं को छोड़ने का संकल्प करवाया। आचार्य जी ने अपने प्रवचन में वेद एवं सोलह संस्कार की विस्तृत व्याख्या की।श्रीमती राधा त्रिवेदी एवं श्री इन्द्रदेव पीयूष ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किये।

-श्रीमती ललिता मेहरा, मंत्री

आर्यसमाज के प्रचारार्थ तैयार की गई विभिन्न योजनाएं एवं मोबाइल एप्प : आर्यजन लाभ उठाएं

Arya Samaj Mob. Apps - On Google Play Store for Android

Mobile App.-Arya Locator

आर्य समाज की संस्थाओं को एक प्लेटफार्म पर लाने और उनकी लोकेशन्स को गूगल पर लाने के लिए इस मोबाइल एप्लीकेशन का निर्माण किया गया है | यदि आपकी संस्था का अभी तक इसमें रजिस्ट्रेशन नहीं हैं तो कृपया अपनी संस्था को

"Arya Locator"

पर रजिस्टर करें |

GET IT ON Google Play

Mobile App.-Arya Samaj Bhajnavali

आर्य समाज भजनावली, इस एप्प के अन्तर्गत आपको वैदिक मन्त्र, धार्मिक भजन, गीत, यज्ञ, देशभक्ति एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती आदि के गीतों सहित भजनों का एक अनूठा संग्रह है

"Arya Samaj Bhajnavali"

इस एप्प को गूगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें |

GET IT ON Google Play

Mobile App.-Satyarth Prakash Audio

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश का हिन्दी ऑडियो रूपांतरण, अब आप इस एप्प के माध्यम से सत्यार्थ प्रकाश को ऑडियो में सुन सकते है | इस एप्प का निर्माण लोगों की व्यस्त जीवन शैली को ध्यान में रखकर किया गया है | इस एप्प को गूगल प्लेस्टोर में जाकर

"Satyarth Prakash Audio"

लिख कर इसको डाउनलोड करें |

GET IT ON Google Play

Mobile App.-Prayer Mantra

समय पर संध्या, और प्रात:कालीन/सायंकालीन मंत्रों को पाठ करने और याद दिलाने के लिए उपयोगी मोबाइल एप्लीकेशन | जहाँ पर भी आप हैं वही के सूर्योदय के समय के हिसाब से चलने वाली एप्लीकेशन

"Prayer Mantra"

अवश्य डाउनलोड करें और अपने मित्रों को भी कराएं |

GET IT ON Google Play

Mobile App.-Namavali

वैदिक बाल –नामावली अपने बच्चों के नामकरण हेतु उपयोगी मोबाइल एप्लीकेशन |

"Arya Samaj Naamawali"

अवश्य डाउनलोड करें और अपने मित्रों को भी कराएं |

GET IT ON Google Play

Mobile App.-WhatsApp

व्हाट्सएप्प पर
आर्य समाज से जुड़ें
हमारा नंबर Save करें

9540045898

अपना नाम City और Yes लिख कर भेजें

नोट –हमारा नंबर Save करने के बाद ही आप Message रिसीव कर पाएगें |

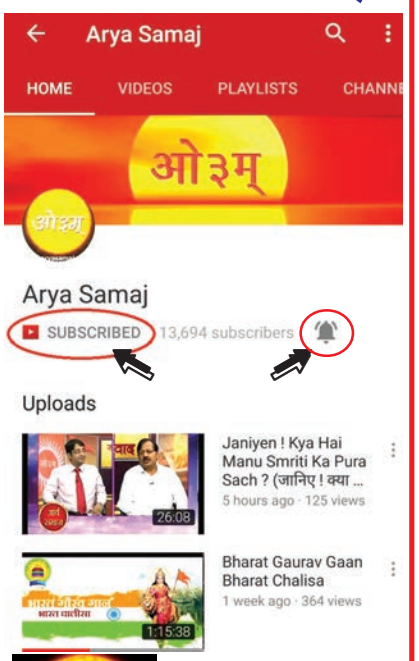

आर्यसमाज का YouTube टीवी चैनल :

20 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा

आप भी देखें और सब्सक्राइब करें; घंटी बटन को दबाकर नई वीडियो की सूचना प्राप्त करें।

आप अपने कार्यक्रमों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

फेसबुक :

दिल्ली सभा की ओर से 'आर्यसन्देश दिल्ली' के नाम से फेसबुक पेज का संचालन किया जाता है। आप एकाउंट के साथ मित्र बनें तथा लाईक एवं शेयर करके सभा के विचारों-सूचनाओं को प्रसारित करें। www. facebook. com/ profile. php? id = 100010262285384

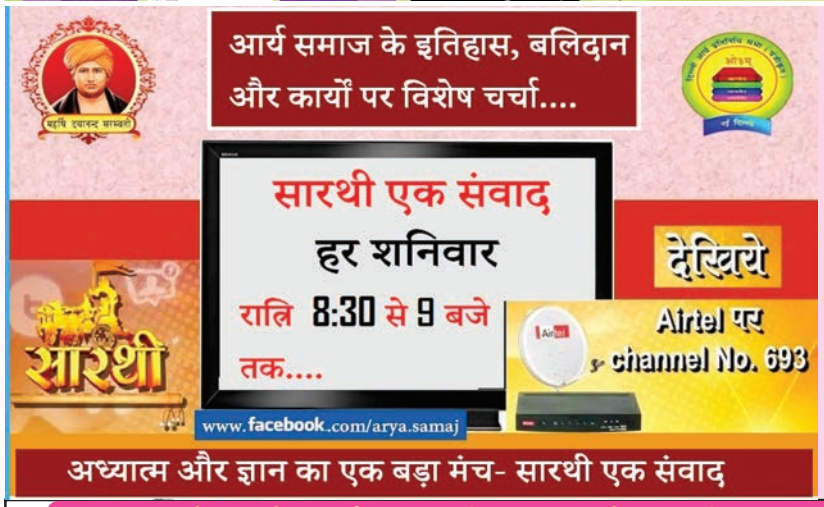

अब देखिए
सारथी
एक संवाद

हर रविवार
दोपहर
12:30
बजे से

म्यांमार सम्मेलन में आर्य संन्यासी महानुभावों, आजीवन ब्रह्मचारी, वैदिक विद्वान एवं वानप्रस्थियों हेतु विशेष यात्रा व्यवस्था

आपको विदित ही है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 06, 07 तथा 08 अक्टूबर 2017 को म्यांमार (बर्मा) के माण्डले शहर में आयोजित किया जा रहा है। इस सम्मेलन में आर्य संन्यासी महानुभावों, आजीवन ब्रह्मचारियों, वैदिक विद्वानों एवं वानप्रस्थी महानुभावों के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार द्वारा साधारण ए.सी. आवास व्यवस्था, एटैच बाथरूम उपलब्ध कराई गई है। अत: यात्रा नं. 3 का विकल्प तैयार किया गया है। **इसमें यात्रा शुल्क दिल्ली से मात्र 45 हजार रुपये और कोलकाता से 40 हजार रुपये निश्चित किया गया है।** स्थानीय भ्रमण व्यवस्था यात्रियों को स्वयं करनी होगी। इस व्यवस्था में **केवल 15 सीटें ही उपलब्ध** हैं। इस यात्रा विकल्प के सभी यात्री महानुभाव 4 अक्तूबर को नई दिल्ली और कोलकाता से उड़ान भरेंगे। **नई दिल्ली /कोलकाता से रंगून - रंगून से डीलक्स ए.सी. बस द्वारा मांडले। दिनांक 9 अक्तूबर को डीलक्स ए.सी. बस द्वारा मांडले से रंगून और वहां से नई दिल्ली/कोलकाता हवाई अड्डा।** जो आर्य संन्यासी महानुभाव, आजीवन ब्रह्मचारी, वैदिक विद्वान एवं वानप्रस्थी इस यात्रा सेवा का लाभ लेना चाहते हों वे तत्काल आवेदन करें। आवेदन पत्र **www.thearyasamaj.org** से डाउनलॉड भी किया जा सकता है।अधिक जानकारी के लिए **श्री एस.पी. सिंह जी (09540040324)** से सम्पर्क करें। यात्रा शुल्क राशि **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बैक ड्राफ्ट द्वारा **श्री प्रकाश आर्य जी, मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,** 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजें। अन्य नियम व शर्तें पूर्ववत रहेंगी।

- संयोजक

Veda Prarthana - 13

We Must Get Rid of Our Vices to Become True Devotees of God.

- Acharya Gyaneshwarya

न पापासो मनामहे नारायासो न जळहवः। यदिन्त्रिन्द्रं वृषणं सचा सुते सखायं कृ णवाम है।।

Na papaso manamahe naarayaso na jalahawah. Yad it nu indram vrshnam sacha sute sakhayam krnvamahai.

(Rig. Veda 8:61:11)

Na papaso manamahe We cannot become true devotees of God if we perform sinful deeds, na arayaso if we are miserly and do not share wealth with others, na jalahawah and if we are selfish and of no service to our fellow beings. Yad it nu therefore, with certainty sakhayam to become true friend of indram God Who is Master of all wealth, and Universal Benefactor, vrshnam and showers us with prosperity sacha sute we must first do good deeds in life and become generous krnvamahai thus we will become deserving.

We cannot become true devotees of God without correct knowledge of God, soul and how we should live virtuously. Similarly, we cannot become true devotees of God if we perform wrong or sinful deeds in thought, words or actions that are against the teachings of the Vedas and our rishis. To become true devotees of God we have to knowingly and consciously make God our constant Companion and Friend. We can do this only if we start incorporating some of God's attributes in our lives to the extent possible, such as following truth, becoming generous, being kind and just when dealing with others in our thoughts, words and our deeds.

The current state of most so called believers, devotees and worshippers of God is that most of them believe by merely going through the ritual of worship they can consider and claim themselves to be true devotees and lovers of God. The ritual usually consists of going to a designated holy place such as a temple (in other religions a church, synagogue or a mosque) where the devotee with folded hands bows before a moorti (icon) or an image such as a picture; lights a lamp; offers water, milk, sweets and/or flowers; says a couple of mantras or other sayings from holy books; sings a bhajan (song); or circles the temple building. As soon as the devotee leaves the temple he/she starts to believe that I have done my religious duty for the day, I have worshipped and pleased God (as if God is an unhappy person, even though in the Vedas God is called Poornam i.e. Perfection and Akamo i.e. without personal desires), and now I am free to live as I want. Whether the worksite be a shop, factory, office, school or the court, irrespective of the place of work the same 'devotee' feels no hesitancy in cheating, lying, deception, fraud, taking or giving bribes, or injustice. Many so called devotees kill animals and birds for eating and despite their cruelty believe God should be kind to them. There are persons who use intoxicating agents such as bhang (marijuana), cocaine, heroin, alcohol and other agents and consider themselves true devotees of God. There are exploiters of the poor, robbers, rapists, killers and doers of other heinous deeds and still consider themselves to be devotees of God because they went to the temple to do a worship ritual, attended a prayer service or gave a small donation. What a strange hypocrisy and deceptive joke such doers of sinful or evil deeds are deluding themselves with despite their characteristics being so vile and their actions so despicable, yet they consider themselves dharmic (followers of dharma i.e. religious), true believers and devotees of God?

This mantra states that human beings who are totally selfcentered or selfish, performing wrong deeds to gain wealth and prosperity as well as persons who perform sinful or evil deeds can never be true devotees of God. Such persons cannot acquire gifts which God gives us such as wisdom, inner peace, fulfillment, joy, liberation, strength and will power. God does not consider us worthy of these gifts just because we performed the rituals of prayer and worship for a few minutes during the day but rest of the day we lived a non-virtuous or sinful life. To receive showers of God's blessings one has to constantly live a virtuous life from the moment one rises in the morning and until one goes to bed at night. One has to always remember and follow God's teachings as well as perform virtuous deeds. We should all perform our deeds based on what God has instructed us through the Vedas and rishis (sages) have guided us through related scriptures such as Upanishads and Darshanas. A person who does deeds because they are convenient or expedient but are otherwise non-virtuous and/or wrong cannot become a friend or companion of God. On the other hand those persons who follow God's commands, irrespective of what happens in the society at large, find God as their Constant Companion and enjoy God's friendship in life.

Those persons who are ignorant of their spiritual nature and whose mind, intellect and the soul are totally focused on selfishness, lying, deception, laziness, cruelty and/or exploitation of others as means to fulfill their personal ambition will never attain true spiritual peace, bliss, fearlessness or bravery. Dear God as we have grown and matured we have finally realized that to become Your true friend we must follow a path of virtue guided by You, become generous and give selfless service of donations to the others especially the needy. Therefore, it is our humble prayer to you, dear God please inspire and guide us to follow Your path and obtain Your blessings.

Dear God, we make a commitment that from now on we will follow Your teachings as directed in the Vedas and related scriptures. Every day we will wake up early in the morning and start the day by thanking You for giving us a new day and a new opportunity to get closer to You and make You our conscious Companion and Friend. We will exercise every morning to make our body healthy and strong and then bathe to clean our outside. Thereafter, we will sit down with a calm mind, free from external distractions, to pray and meditate on Your attributes to clean our inside i.e. our mind and soul. We will make effort to acquire some of Your attributes in our lives to the extent possible, such as following truth, becoming generous, being kind and just when dealing with others in our thoughts, words and our actions, We will do daily yajna (havan, agnihotra) i.e. fire ceremony to purify ambient environment and honor noble persons, followed by swadhyaya by studying Vedas and Vedic scriptures as well as do introspection whether or not we are progressing and uplifting our personal lives or are we going backwards in our life journey. We will donate our time and money selflessly for just causes and the uplift of oters. Also, at a personal level we will live simply, eat healthy foods, wear simple clothes and not be show offs. We will refrain from lying, deception, demeaning others and other wrong or sinful behaviors when interacting with others. Moreover, we will not be satisfied by our progress only, but with our body, mind and wealth help selflessly our friends, neighbors and others in the society for their welfare and prosperity.

Dear God You are called Indra in the Vedas because You are the Ultimate Master of all wealth and prosperity, as well as You are the Universal Benefactor. Please bless us with such spiritual and mental wisdom and strength so that at all times we experience peace, courage, fearlessness, bravery and bliss. Dear God, with this hope and desire we have come for Your shelter.

(To get rid of your vices and bad conduct in life : also see mantra # 15,16,18,20,22, and 23)

To be continued...

आओ ! संस्कृत सीखें संस्कृत पाठ - 28 (स) **छन्द रचना**

गतांक से आगे....

मन्दाक्रान्ता : मन्दाक्रान्ता छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, भगण, नगण, तगण और दो गुरु वर्णो पर यति होती है। यही बात इस लक्षण में कही गई है: मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ ग-युग्मम्। क्योंकि अम्बुधि (सागर) 4 हैं, रस 6 हैं, और नग (पर्वत) 7 हैं, अत: इस क्रम से यति होगी और मगण, भगण, नगण, तगण, और दो गुरु वर्ण होंगे । उदाहरण:

ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

यद्वा तद्वा विषमपतित: साधु वा गर्हितं वा कालापेक्षी हृदयनिहितं बुद्धिमान् कर्म कुर्यात् ।

किं गाण्डीवस्फुरदुरुघनस्फालन क्रूर पाणि: नासील्लीलानटनविलखन् मेखली सव्यसाची।।

उपेन्द्रवज्रा : इस छन्द के भी प्रत्येक चरण में 11-11 वर्ण होते हैं । लक्षण इस प्रकार से हैं:

उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ

इसका अर्थ यह है कि उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण और दो गुरु वर्णो के क्रम से वर्ण होते हैं । इस का स्वरुप इस प्रकार से है:

। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

जगण तगण जगण दो गुरु

उदाहरण:

। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

त्वमेव माता च पिता त्वमेव

त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव

त्वमेव सर्वंमम देव-देव।।

(अंतिम 'व' लघु होते हुए भी गुरु माना गया है।) - *क्रमश:* -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

मो. 9899875130

आंचल-छाया गुरुकुल में प्रवेश प्रारम्भ

कन्या गुरुकुल भुसावर (राज.) में माता-पिता के प्यार से वंचित, उपेक्षित, साधनहीन बेटियों को पढ़ाने तथा संस्कारवान के लिए आंचल-छाया नाम से एक नया विभाग प्रारम्भ किया गया है। जिसमें बेटियों को कक्षा 4 से 7 तक नि:शुल्क शिक्षा का प्रबन्ध किया गया है। गुरुकुलीय शिक्षा, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, संगीत, सिलाई प्रशिक्षण सभी को अनिवार्य रूप से सिखाया जाएगा। स्थान सीमित है। सम्पर्क करें- **प्रियंका भारती, 9694892735, 8441087408**

62वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज राधापुरी दिल्ली 2 अक्टूबर 2017 को अपना 62वां वार्षिकोत्सव मना रहा है इस अवसर पर प्रभात फेरी, चारों वेदों के चुने हुए मंत्रों द्वारा यज्ञ आचार्य देव आर्य जी के ब्रह्मत्व में व भजन आचार्य देव आर्य एण्ड पार्टी द्वारा प्रस्तुत किये जाएंगे। साथ ही बच्चों के कार्यक्रम भी प्रस्तुत होंगे। - ***मन्त्री***

निर्वाचन समाचार

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल

प्रधान - श्री ओम प्रकाश यजुर्वेदी

महामंत्री - श्री चतर सिंह नागर

कोषाध्यक्ष - श्री ओम वीर सिंह

पुरोहितों/धर्माचार्यों की आवश्यकता

ऐसे महानुभाव जो गुरुकुलीय पद्धति से शिक्षा प्राप्त हैं तथा दिल्ली की आर्यसमाजों में पुरोहित/ धर्माचार्य के रूप में अपनी सेवाएं देना चाहते हैं। वे कृपया आवेदन पत्र नाम, पते, मोबाईल नं., ईमेल, योग्यता आदि लिखकर निम्नलिखित पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें -

अध्यक्ष/संयोजक, वैदिक प्रचार समिति

द्वारा/दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

प्रथम पृष्ठ का शेष

हमेशा मन में जड़ें जल्दी जमाते हैं। कई बार यह नकारात्मकता प्रयोग को ठेलने लगती है।

भारत की निर्वाचित सरकारें केवल आर्थिक बदलाव लाना चाहती हैं। स्वतंत्रता के बाद हमारे देश में विदेशी पूंजी के साथ ही वहां की विकृत संस्कृति भी आ धमकी है, जिसके चलते हमारी दमित इच्छाएं सामने आने लगी हैं तथा हमारे मनोविकार भी बढ़ते चले जा रहे हैं। हम अपने परम्परागत नैतिक मूल्यों व समृद्ध संस्कृति को लेकर बहुत ही आत्ममुग्ध हैं, जबकि हमारी सांस्कृतिक परम्पराएं अब केवल सांस्कृतिक समारोहों और साहित्य तक ही सीमित रह गई हैं, जोकि आज के इंटरनैट के युग में बहुत पिछड़ी मानी जाती हैं। जिस कारण आज का युवक गलत आचरण करने से भी नहीं हिचकता।

प्रद्युम्न के हत्यारे को कड़ी सजा मिले, स्कूल के खिलाफ भी कड़ी कार्रवाही हो, लेकिन साथ में चर्चा इस बात पर भी हो कि फिर ऐसे काम न हों जिससे सभ्य समाज को बार-बार शर्मसार न होना पड़ें। आज प्रद्युम्न का हत्यारा बस कंडक्टर सलाखों के पीछे है। यमुनापार स्कूल में बच्ची से दुष्कर्म करने वाला गार्ड भी पकड़ा गया। समाज का एक हिस्सा समझ रहा होगा चलो अब कुछ नहीं होगा तो यह सिर्फ भूल है क्योंकि कल कोई दूसरा किसी मासूम का जीवन वासना की तृप्ति के लिए लील रहा होगा। दुनिया में यौन शोषण के शिकार हुए बच्चों की सबसे बड़ी संख्या भारत में है लेकिन फिर भी यहां इस बारे में बात करने में हिचक दिखती है। भारत में बाल यौन शोषण एक महामारी की तरह बन चुका है। इस समस्या को गोपनीयता और इन्कार की संस्कृति ने ढक रखा है और इस सब में सरकारी उदासीनता भी खारिज नहीं की जा सकती है।

अभी सितम्बर माह के पहले हफ्ते में बच्चों के साथ यौन उत्पीड़न के एक कथित मामले में दिल्ली पुलिस ने ब्रिटिश नागरिक को पॉस्को एक्ट के तहत गिरफ्तार किया है। नेत्रहीन तीन नाबालिगों का यौन उत्पीड़न करने का आरोपी ब्रिटिश नागरिक दक्षिणी दिल्ली के आर के पुरम में स्थित नेशनल एसोसिएशन ऑफ ब्लाइंड (एनएबी) में रहने वाले बच्चों का यौन उत्पीड़न कर रहा था। वर्ष 2012 में भारत में बच्चों को यौन हिंसा से बचाने वाला कानून (पॉस्को) बनाया गया ताकि बाल यौन शोषण के मामलों से निपटा जा सके लेकिन इसके तहत पहला मामला दर्ज होने में दो साल लग गए। वर्ष 2014 में नए कानून के तहत 8904 मामले दर्ज किए गए लेकिन उसके अलावा इसी साल नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो ने बच्चों के बलात्कार के 13,766 मामले, बच्ची पर उसका शीलभंग करने के इरादे से हमला करने के 11,335 मामले, यौन शोषण के 4,593 मामले बच्ची को निर्वस्त्र करने के इरादे से हमला या शक्ति प्रयोग के 711 मामले, घूरने के 88 और पीछा करने के 1,091 मामले दर्ज किए गए।

आखिर आज स्कूल क्यों बताने से कतरा रहा है कि स्कूल में जिन लोगों को नियुक्त किया गया है उन पर कभी कोई खास ध्यान दिया गया? उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर भी नजर डाली है कि वे किस माहौल से आए हैं, इस पहलू को भी दरकिनार नहीं किया जा सकता है। अपने बच्चों के प्रति यह हमारी जिम्मेदारी है कि उन्हें एक सुरक्षित बचपन दें। यह सब रुकना ही चाहिए। गलत है या सही, इस पर ज्यादा ध्यान दें और गलत को कभी न सहें। अब जरूरी है कि आवाज उठाओ, चुप न रहो और अपने हक के लिए लड़ जाओ, क्योंकि हमें खुद ही अपने बच्चों के बारे में सोचना होगा। अगर हम इस बात को मानकर बैठ जाएं कि यह आखिरी प्रद्युम्न था तो यह हमारी सबसे बड़ी भूल होगी। कुछ दिन बाद इसी तरह कोई और एक खून सनी घटना हमारे सामने मुंह खोले खड़ी होगी और पूछ रही होगी आखिर इस बच्चे का कसूर क्या था?

-विनय आर्य

आवश्यकता है

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत संचालित रानी बाग, सैनिक विहार, धनश्री, बामनिया तथा अन्य स्थानों पर संचालित विद्यालयों एवं गुरुकुलों के लिए प्रबन्धकों, सहायकों, अध्यापक-अध्यापिकाओं, वार्डन एवं केयरटेकर की आवश्यकता है। आवास सुविधा, वेतन योग्यतानुसार देय। गुरुकुलीय पद्धति से शिक्षा प्राप्त/आर्यसमाजी पृष्ठभूमि से जुड़े महानुभाव युवा/वानप्रस्थी(पूर्ण सक्षम अनुभवी महानुभाव को विशेष प्रथमिकता) अपना विवरण arya sabha@yahoo.com पर ई मेल करें या महामन्त्री, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, द्वारा/ 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 पते पर भेजें

- जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री

आर्यसमाज औचन्दी एवं सभा द्वारा संचालित
दीवानचन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय औचन्दी

वार्षिकोत्सव एवं वेद सम्मेलन

आर्यसमाज औचन्दी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्र में मानव मात्र की सेवा के लिए संचालित दीवानचन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय औचन्दी का वार्षिकोत्सव एंव वेद सम्मेलन 21 से 24 सितम्बर तक आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रभात फेरी 16 सितम्बर को आयोजित होगी। ऋग्वेद पारायण यज्ञ स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी के ब्रह्मत्व में तथा भजनोपदेश श्री सहदेव बेधकड़ जी के होंगे। समापन एवं वेद सम्मेलन 24 सितम्बर को प्रात: 8:30 से 2 बजे तक आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर माता चन्नन देवी हस्पताल की ओर से नेत्र, अस्थी, खून, एवं सामान्य जांच शिविर का आयोजन भी किया जाएगा। आप सब अधिकाधिक संख्या पधारकर धर्म एवं स्वाथ्य लाभ अर्जित करें।

- अश्विनी आर्य, चेयरमैन **महेन्द्र सिंह आर्य, मन्त्री**

गुरुकुल स्नातक संगोष्ठी का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा शीघ्र ही गुरुकुल स्नातक संगोष्ठी का आयोजित करना चाहती है, जिसमें ऐसे सभी महानुभावों जो गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से शिक्षा प्राप्त हैं तथा दिल्ली में रहते हुए अपना व्यवसाय-व्यापार अथवा दिल्ली के विद्यालयों अथवा अन्य संस्थानों में अध्यापन कार्य में सेवारत हैं एवं पुरोहित कर्म नहीं करते हैं, को आमन्त्रित किया जाएगा। अत: यदि आप ऐसे महानुभाव हैं अथवा किसी ऐसे महानुभावों को जानते हैं तो कृपया अपना/उनका नाम, पता, मो. नं., ईमेल पता श्री राजीव चौधरी जी (09540095151) को लिखवाने अथवा daps.mediadesk @gmail.com पर भेजने की कृपा करें, जिससे संगोष्ठी की सूचना भेजी जा सके। - *महामन्त्री*

शोक समचार

डॉ. बलराम राणा का निधन

आर्यसमाज आर्य नगर, पहाड़ गंज के प्रधान, 104 वर्षीय वयोवृद्ध आर्यनेता डॉ. बलराम राणा जी का 10 सितम्बर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 11 सितम्बर को प्रात: 11:30 बजे उत्तम नगर शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति मे शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा आर्यसमाज ए ब्लाक जनकपुरी में 14 सितम्बर को सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों एवं निकटवर्ती अनेक आर्यसमाज के सदस्यों ने उपस्थित होकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री प्रेमप्रकाश शर्मा को पत्नीशोक

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के मन्त्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती उषा शर्मा जी का 11 सितम्बर को निधन हो गया। वे अपनी पीछे अपने पति एवं एक सुपुत्री श्रीमती अनीता व दामाद श्री सुनील जी का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। वे काफी समय से बीमार चल रही थीं तथा सिनर्जी हस्पताल में वेन्टीलेटर पर थी। उनका अन्तिम संस्कार 12 सितम्बर को पूर्ण वैदिक रीति से साथ लक्खीबाग शमशान घाट पर आर्यसामाज धामावाला के पं. विद्यापति शर्मा एवं गुरुकुल पौंधा के आचार्य डॉ. धनंजय शास्त्री के मन्त्रोच्चार के साथ सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 17 सितम्बर को आर्यसमाज लक्ष्मण चौक देहरादून में दोपहर 2 से 4 बजे सम्पन्न होगी।

श्रीमती सुशीला सेठ का निधन

स्त्री आर्यसमाज धामावाला, देहरादून की पूर्व प्रधाना श्रीमती सुशीला सेठ जी का 11 सितम्बर को 87 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे कई वर्षों से पक्षाघात के कारण बिस्तर पर थीं। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 14 सितम्बर को आर्यसमाज धामावाला में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 11 सितम्बर, 2017 से रविवार 17 सितम्बर, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 14-15 सितम्बर, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 13 सितम्बर, 2017

प्रेरक कार्य

50वीं वर्षगांठ पर सभा में 'मदान व चुघ निधि' स्थापित

आर्य समाज पंखा रोड सी-3 जनकपुरी में 9 सितम्बर 2017 को एक समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान एवं आर्य समाज पंखा रोड, जनकपुरी के प्रधान श्री शिव कुमार मदान जी की 50वीं वैवाहिक वर्ष गांठ धूमधाम के साथ मनाई गई। इस अवसर पर श्री शिव कुमार मदान जी ने एक लाख रुपये का चैक 'मदान व चुघ निधि' की स्थापना हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य को भेंट किया गया। श्री मदान की 50वीं वैवाहिक वर्षगांठ के अवसर पर मदान परिवार की ओर से सभी आगन्तुकों को एक-एक स्मृति चिह्न भेंट किया गया।

सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य को सभा में मदान परिवार की ओर से 'मदान व चुघ निधि' की स्थापना हेतु चैक प्रदान करते श्री शिव कुमार मदान जी।

प्रतिष्ठा में,

लाला लाजपतराय भवन पर औषधीय काढ़ा पिलाया

लाला लाजपतराय जनहित ट्रस्ट एवं आर्य समाज जिला सभा कोटा के संयुक्त तत्त्वावधान में लाला लाजपतराय भवन पर डेंगू और स्वाइन फ्लू के बढ़ते प्रकोप से बचाव हेतु औषधीय काढ़ा पिलाया गया। कार्यक्रम संयोजक श्री रामचन्द्र मलिक ने बताया कि कोटा में दिनों-दिन फैल रहे स्वाइन फ्लू और डेंगू के प्रकोप से बचाव के लिए 22 जड़ी बूटियों से निर्मित आयुर्वेद काढ़े का वितरण लगभग 3475 लोगों के बीच किया गया। यह कार्यक्रम आर्य समाज जिला प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढ़ा जी के नेतृत्व में श्योराज वशिष्ठ के अतिरिक्त पतंजलि योग समिति के जिलाध्यक्ष प्रदीप शर्मा की देखरेख में नि:शुल्क आयोजित किया गया। -*अर्जुनदेव चड्ढ़ा*

आर्य कुमारो! जागो तुम

बढ़ गए पोप पाखण्डी, भोली जनता को लूट रहे।
अज्ञानी धूर्त, घमण्डी, भोली जनता को लूट रहे।।
वेद सभ्यता सदाचार की, भारी हंसी उड़ाते हैं।
ईश्वर की पूजा छुड़वाकर, निज पूजा करवाते हैं।।
बनते हैं स्वामी दण्डी, भोली जनता को लूट रहे।
अज्ञानी, धूर्त, घमण्डी, भोली जनता .....

सुल्पा, गांजा, मदिरा पीते, मुर्गा, बकरा खाते हैं।
करते हैं व्यभिचार रात-दिन, तनिक नहीं शर्माते हैं।।
रखते हैं पापी रण्डी, भोली जनता को लूट रहे।
अज्ञानी, धूर्त, घमण्डी, भोली जनता .....

राम, कृष्ण से संतपुरुषों को, भारी दोष लगाते हैं।
कथा, कीर्तन करते हैं, कन्याएं नीच नचाते हैं।।
कहते हैं सखी हैं चण्डी, भोली जनता को लूट रहे।
अज्ञानी, धूर्त, घमण्डी, भोली जनता .....

ईश्वर दर्शन कराने की, पक्की गारन्टी देते हैं।
भोले भाले व्यक्तियों को, लूट कुचाली लेते हैं।।
खुल रही ठगों की मण्डी, भोली जनता को लूट रहे।
अज्ञानी, धूर्त, घमण्डी, भोली जनता .....

आसाराम, खल रामपाल, राधे मां हैं अब जेलों में।
देश द्रोही गुण्डे हैं, गुरमीत दैत्य के चेलों में।।
जिनकी कारों पर झण्डी, भोली जनता को लूट रहे।
अज्ञानी, धूर्त, घमण्डी, भोली जनता .....

अगर रहा यह हाल, सज्जनों! यह भारत मिट जाएगा।
यह सारा संसार हमें प्रमादी मूढ़ बताएगा।।
नाचेंगे नग्न उदंडी, भोली जनता को लूट रहे।
अज्ञानी, धूर्त, घमण्डी, भोली जनता .....

सुख पाओगे, जगत गुरु ऋषि दयानन्द को जानो तुम।
जगहितकारी देव दूत की, शिक्षाओं को मानो तुम।।
बनते विद्वान शिखंडी, भोली जनता को लूट रहे।
अज्ञानी, धूर्त, घमण्डी, भोली जनता .....

''नन्दलाल'' निर्भय कहता है, आर्य कुमारों जागो तुम।
करो वेद प्रचार जगत में, कलह, फूट को त्यागो तुम।।
मतवादी गुण्डे फण्डी, भोली जनता को लूट रहे।
अज्ञानी, धूर्त, घमण्डी, भोली जनता .....

-पं. नन्दलाल निर्भय, सिद्धान्ताचार्य
मो. 9813845774

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह